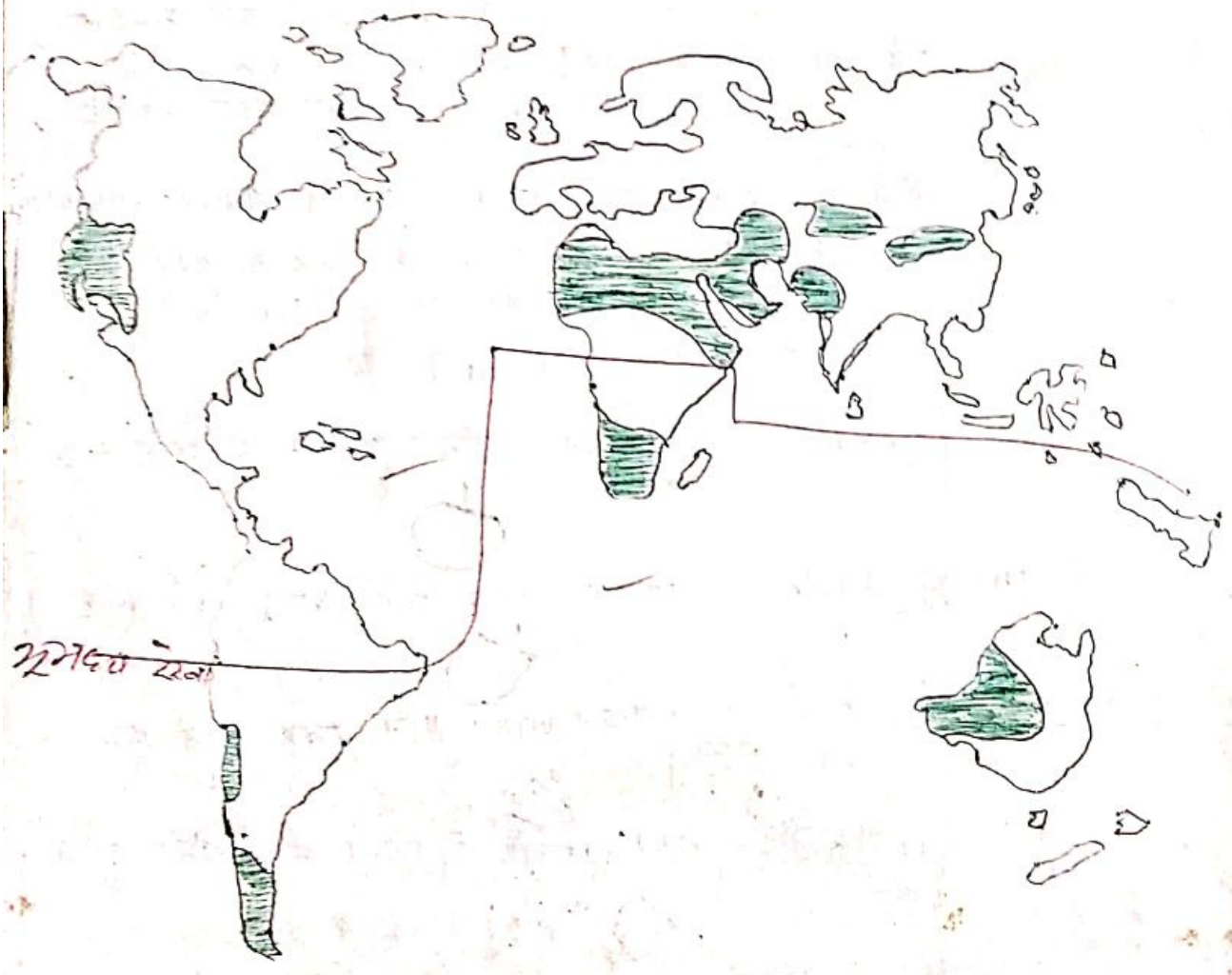


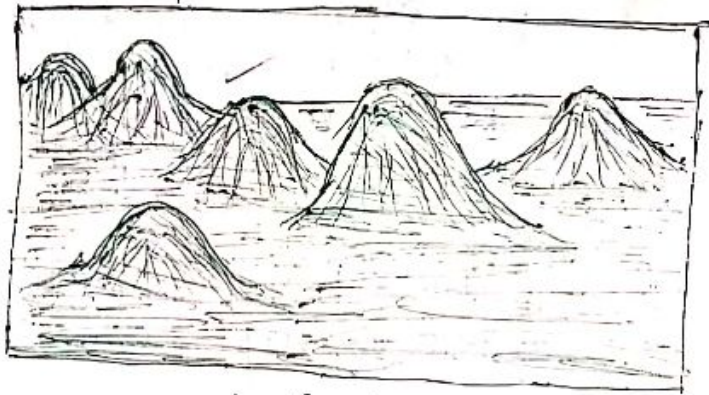
Ques वायुमंडल प्रदूषण द्वारा कौन से स्वास्थ्य का खतरा कि संकेतन कि संकेतन प्रस्तुत करें।

Ans अपरदन के अन्य कारकों के समान धूल भी अपरदन तथा निक्षेपण का एक प्रमुख कारण है। परन्तु यह हिमानी और बरफियों के साथ से बनता है। धूल की प्रकृति विश्व में भिन्न-भिन्न तथा अनेकविधों के कारण अलग-अलग परिमाण भी किसी भी रूप में किसी भी विश्व में ही प्रकृत हैं। धूल द्वारा अपरदन कार्य अर्द्ध गुरुत्व तथा गुरुत्व सहस्रावधि मात्रों में आलायिक सक्रिय है। धूल के अन्तर्गत पर अर्द्धगुरुत्व स्थितियों में जहाँ वर्षा 40 से 50 cm वार्षिक होती है और जहाँ वर्षा 25 cm वार्षिक होती है धूलों अधिक सक्रिय रहती हैं।

विश्व के प्रमुख गुरुत्व तथा अर्द्ध गुरुत्व क्षेत्र



आकार पर मिट्टी आदि का निक्षेप नहीं मिलता



इन्सलबर्ग (Inselberg)

(ii)

कवक शिला (Mushroom rock) → महाखानी भागों में यह कठोर शैल के रूप में उपरी आवरण के नीचे कोमल शैल तबकवार रूप में मिलती है तो उपर पर पवन के अपघर्षण के प्रभाव से निचले भाग में अत्यधिक अपघर्षण द्वारा उत्तम आकार करने लगता है, जबकि उसका उपरी भाग अप्रभावित रहता है। यह पवन एक दिशा से चलती तो फटाक एक ओर ही होता, परन्तु पवन के चारों दिशाओं से चलने के कारण उत्तम बिचला भाग घटता ही जाता है, तथा उपरी भाग अप्रभावित रहता है तथा विस्तृत रहता। इस तरह एक झरीनुमा स्वरूप का विकृत होता है जिसे 'कवक शिला' या 'गारा' कहते हैं।



कवक शिला

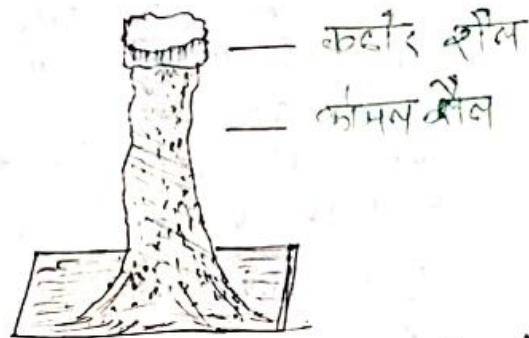
Mushroom rock

or

Gara

संयोजक

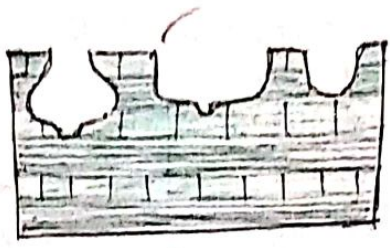
(iii) मू-संयोजक (Demosalcher) → शुष्क प्रदेशों में जहाँ पर शरणावृत्ति तथा कोमल शैल के ऊपर कठोर तथा प्रतिरोधी शैल का आवरण होता है वहाँ पर इस आवरण के कारण नीचे की कोमल शैल का अपरदन नहीं हो पाता परन्तु क्षण-क्षण की शैल ऊपर ऊपर आती है और कठोर शैल के आवरण का भाग पर शंभु के रूप में समुद्र पर दिखाई पड़ता है इसे मू-संयोजक कहते हैं।



मू-संयोजक (Demosalcher)

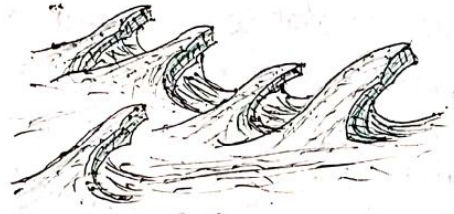
(iv) ज्यूजेन (Zeugen) → महत्वपूर्ण भाग में यदि कठोर तथा कोमल शैलों की परतें ऊपर-नीचे एक-दूसरे के सामानान्तर होती हैं तो अपक्षय तथा वायु द्वारा अपरदन के कारण विचित्र प्रकार के स्थलरूपों का निर्माण हो जाता है, जो दृक्मण्डलों या वादों के समान होते हैं अर्थात् अपना ऊपरी भाग कम चौड़ा तथा निचले भाग अत्यधिक चौड़ा होता है। ऐसे स्थलरूपों को ज्यूजेन कहते हैं। इनका निर्माण प्रायः महत्वपूर्ण भागों में होता है। कठोर निर्माण की क्रिया अत्यंत सरल है। उपरी कठोर शैल की संखियों तथा छिद्रों में आस भर जाती है जो दिन में सूर्य की किरणों से सुखित होती है। रात के समय यह आस हिम के रूप में बरस आता है। इस कारण उसमें प्रसार होने से शैल की संखियों पर दबाव से विस्तृत हो जाती है तथा उपरी शैल भाग रुद्ध विषटित होकर टूट-फूट जाता है तथा अपवाहक कण शय ड्रॉ लिया जाता है। इस क्रिया की पुनरावृत्ति कारण ज्यूजेन स्थलरूप का निर्माण होता है।

पहली कक्षा १० से १०० फीट तक गिबना है



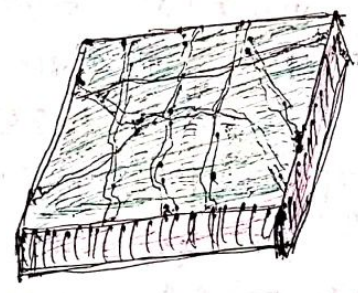
जुजोन
(Zugew)

(iv) थारडंग (Parolung) → उसकी रचना जुजोन के विपरीत होती है। जब कीमती तथा कठोर चट्टानों के स्तर एक-दूसरे के साथ मिलते हैं तो पवन कठोर शीत की अपेक्षा मुलायम शीत का शीघ्र अपरदन करके उड़ा देता है। इस प्रकार कीमती चट्टानों के स्तर जाने से कठोर शीत के भाग स्वच्छ रह जाते हैं। इस लक्षण को थारडंग कहते हैं। थारडंग प्रायः पवन की ^{दिए गए} सामानांतर रूप में होते हैं। इसकी ऊंचाई २० ~~से~~ फीट तथा चौड़ाई ३० से १२० फीट तक होती है। थारडंग का निर्माण विभिन्न रूप से पवन के अपवर्षण (abradation) की शक्ति से होता है।



थारडंग
Parolung

(v) प्रस्तर जाय → मरुस्थल क्षेत्रों में अपहाय के कारण क्षिप्र चट्टानों में विभिन्न संक्षेप बन जाते हैं। हवा द्वारा इन संक्षेपों का पुनर्रूप हटा लिया जाता है। जिससे इस प्रस्तर क्षिप्र पर जल विकसित होते हैं।



प्रस्तर जाय

(10) पवन खिड़की या पूज (Window and Bridge) →

माउण्टन पीक के बीच-बीच में न्यूनतम जगहों को खिड़की कहते हैं। जिनसे पवन पार कर सकता है।
जहाँ पवन की गति तेज हो जाती है।
जहाँ पवन की गति धीमी हो जाती है।
जहाँ पवन की गति रुक जाती है।
जहाँ पवन की गति उल्टी हो जाती है।
जहाँ पवन की गति बढ़ जाती है।
जहाँ पवन की गति घट जाती है।
जहाँ पवन की गति रुक जाती है।
जहाँ पवन की गति उल्टी हो जाती है।
जहाँ पवन की गति बढ़ जाती है।
जहाँ पवन की गति घट जाती है।

Ex - M.P में पंचमढ़ी में जयशंकर गुप्ता के स्मारक के पार करने पर वह खिड़की का रूप लेता है।
प्राकृतिक रूप पवन खिड़की के पार होता है।



पवन खिड़की (Window)

निक्षेपात्मक स्वरूप (Depositional landform) -

जब वायु द्वारा उड़ते हुए धूल और स्थानान्तरित पदार्थों का निक्षेप हो जाता है तो इसे निक्षेपात्मक स्वरूप कहते हैं। इस निक्षेपण का कारण है जहाँ हवा की गति धीमी हो जाती है।

बालुका स्तूप (Sand dune) - पवन द्वारा रेत और

बालु के निक्षेप से निर्मित चिम्बे या स्तूपों को बालुका स्तूप कहा जाता है। इन स्तूपों के आकार में बड़ा स्वरूप में पड़ाव और मिलाव है।

बालुका स्तूप के निम्नलिखित प्रकार होते हैं।

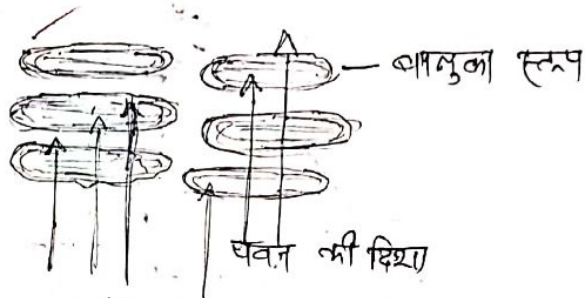
(i) Longitudinal अनुदैर्घ्य बालुका स्तूप → इस प्रकार के बालुका स्तूप में हवाओं के समानान्तर लम्बे बालुका स्तूप मिलते हैं।

उदाहरण → राजस्थान के ध्वनी भाग में तथा सभी महस्यन में।

(ii) (Latitudinal) अक्षांश वायुका स्वरूप \rightarrow इस वायुका स्वरूप में स्वरूप में स्वरूप वायुका स्वरूप पर 90° के कोण पर चलती है। अक्षांश वायुका स्वरूप से वायुमण्डल धूम के वायुका (Black clouds) का जाता है।
उदाहरण - राजस्थान के दक्षिण भाग में।



Longitudinal.



Latitudinal.

(iii) अग्र स्वरूप (Fore cloud) \rightarrow इस वायुका स्वरूप का निर्माण तरंग के सामानांतर होता है। इसमें हवा समुद्र से स्थल की ओर चलती है। यह स्थल महास्थली में गीला बनता।

(iv) Stellate (स्तीर) \rightarrow इसमें वायुका स्वरूप पास-पास तथा चौरी घुसत होते हैं।

(v) Scars (झर) \rightarrow यह कई वायुका स्वरूप का मिश्रण होता है।

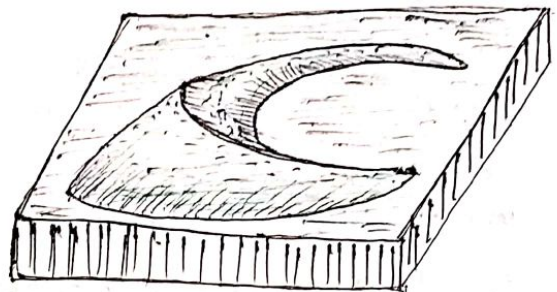
(vi) शिफ (Seif dune) \rightarrow महास्थली में इस प्रकार के वायुका स्वरूप ~~का~~ खड़े कणार के होते हैं। यह वायुका स्वरूप गन्ना होता है। यह देखने में डूबी कणार की तरह लगता है।



ii) बरखान (Barikhan) → बरखान प्राकृतिक वायुमय रूप के ही निर्माण रूप होते हैं। इनका आधार लवणकीय होना है तथा मुक्तिमान में ये अधिक स्थिति में मिलते हैं। बरखान प्राकृतिक ये प्रचलित पवन के सम्बन्ध में निर्मित होते हैं। इनका पवनानुसार ही बनना तथा पवनानुसार ही बनना होता है। इनके लिए ही और पूर्ण विकसित हो सकते हैं। जो कि पवन के चलने की दिशा में निकला होता है। बरखान प्राकृतिक में सर्वाधिक ऊंचे होते हैं।

बरखान का निर्माण अत्यंत शक्ति होता है। इसके लिए भू-विज्ञान अवस्था की आवश्यकता होती है। समान या समान ही वायुमय स्थिति पर जैसे ही धारा में अवस्था होता है या पवन में परिवर्तन होता है, वैसे ही रेत का जमाव लम्बे दूरी के दूरी के रूप में प्रारंभ हो जाता है।

लोयस



बरखान (Barikhan)

iii) लोयस (Loess) → पवन द्वारा उड़ते हुई धूल के निक्षेप से निर्मित जमाव को लोयस कहा जाता है। लोयस का जमाव रेगिस्तानों में दूरस्थ भागों में पाया जाता है, जहाँ मिट्टियों के ढेर होते हैं। इनके भारी-भरकम धारण करने में सक्षम होती हैं। मिट्टी मुलायम होती है। लोयस का निर्माण इस समय होता है जब कि पवन के साथ मिली हुई धूल की धूल एक स्थान पर जमा होने पर निर्मित हो जाती है। लोयस में अत्यंत फैलाव, अत्यंत नया फैलाव इत्यादि स्थितियों का

मिश्रण पाया जाता है। तापमान का इस प्रान्त में
 10°C है। जिसका प्रमुख कारण ओकसीजन का
 क्रिया का होना। तापमान की मात्रा 3000 फीट से
 30000 फीट तक पायी जाती है।

(ix) उत्थान स्थलाकृति (Badland Topography) →
 शुष्क तथा अर्धशुष्क भागों में परतदार क्षेत्रों के लिये
 कृमियों, एड-इंसेक्टों के बाढ़, होत्रों हैं वहाँ पर क्षताधिकृत
 तथा के कारण तरह का होये-होये जल आये बन
 जाती हैं, जिनके द्वारा क्षय के कारण खूब
 नया गहरी खादियों बन जाती हैं। इन खड्डों का बावजूद
 को क्षय करके हुए खड्ड-बावू करके बन जाते हैं।
 इस तरह की स्थलाकृति को उत्थान स्थलाकृति कहते हैं।
 U.S.A में मोंटेना, व्योमिंग, न्यू मैक्सिको, इटा,
 कैलीफोर्निया, एरिजोना, नेवादा आदि प्रांतों में उत्थान
 स्थलाकृति का प्रमुख विकास हुआ है।

(x) पैडीमेंट (Pediment) → पहाड़ के ढाल पर अवस्थित
 अपरदन द्वारा निर्मित चिकनी सतह को पैडीमेंट
 कहते हैं।

(xi) बजारा (Bajada) → अर्धशुष्क क्षेत्रों की पर्वतों की
 तलहटी पर शोलाखरी के निक्षेप को बजारा
 कहते हैं।

~~प्लेयानो (Playas)~~
प्लेयानो (Playas) → अर्धशुष्क क्षेत्रों की चिंतों को
 जलावा कहते हैं। इसमें केन्द्राभिसारी प्रवृत्त बनता
 है। इसमें पानी आदि अव्यक्त दिन तक नहीं
 रहता।

(xii) बासतन (Basin) → क्षिप्त स्थान पर जलावा था
 इसके लिये जाने पर बासतन का निर्माण होता
 है।

(v) पाट (Plateau) → बासतन के तलहटी मिट्टी की
 पाट कहते हैं।

Ex - तापमान बँसिन, चिदाम बँसिन
 अर्धशुष्क स्थान का क्षेत्र है।